भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-16, अंक-10 मंगलवार, 26 अक्टू.' 93	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अक्तूबर, 1993	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' चल रहा है.... हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरुष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति, आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

.....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्राह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्ज़रलैंड, 15-7-'77

❑ **गुरु** बहुत होते हैं,
परन्तु
❑❑ **सद्‌गुरु** कम।
और
सच्चा सद्‌गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

शिकागो, 12-5-'-77

–प.पू. काकाजी महाराज

❑ शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह **गुरु**।
❑❑ सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह **सद्‌गुरु**।

सुनहरे पल— नूतन प्रभात लेकर आई दिवाली......

अहो हो ! चारों ओर आनन्द ही आनन्द व अनहद् सुखों का भंडार साथ में लेकर–कितने उत्सव ही उत्सव लेकर आई दिवाली और इन उत्सवों में सुनहरे रंग भरने–इन सब दिनों को मंगलमय बनाने प्र.ब्र.स्व.साक्षात् गुणातीत स्वरूप प.पू. पप्पाजी दिल्ली पधारे हैं ! तो क्यों ना हम सभी उनके दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ लेकर पूरे वर्ष की 'स्मृतिरूपी पूंजी' इकट्ठी कर लें....इस अद्‌भुत मौके का सम्पूर्ण लाभ लें और इन अवसरों पर प्रार्थना करने से चूके नहीं। जैसे कि–

❑ **शरद्‌पूर्णिणाः–** मू.अ.मू. गुणातीतानंद स्वामी–हम सब के गुरु गुणातीत का प्रागट्य दिन....जिन्हें भगवान स्वामिनारायण अपने साथ ही धरती पर लाए और उनके माध्यम से गुणातीत भाव को पाए हुए संतों द्वारा गुणातीत परंपरा अखंडित रखकर सम्पूर्ण मानवजाति को सनाथ बनाया। सचमुच, अगर गुणातीत धरती पर नहीं आए होते तो 'साधु' शब्द शब्दकोष में ही रह जाता....साधु यानि–सहन करे–सभी का सहन करे वह साधु। साधुता के इस मार्ग पर हम प्रस्थान करें, ऐसे साधु प्रभु हमें बनाएँ यही शरद्‌पूर्णिमा के मंगल अवसर पर साक्षात् गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना......

❑ **प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिनः**-गुरुहरि योगीजी महाराज ने हम सब को एक 'अनुपम भेंट' देने शरद्‌पूर्णिमा का ही महामंगलकारी दिन चुना। अर्थात्–इसी दिन प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को भागवती दीक्षा दी.....समस्त गुणातीत समाज को एक समर्थ इंजन दिया ! और आज हम देख रहे हैं कि कितने ही चैतन्यों की आत्मा का विकास करने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी अविरत परिश्रम कर रहे हैं...हे स्वामिजी ! प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के यथार्थ स्वरूप को हम पहचान सकें यही आपके भागवती दीक्षा दिन पर अन्तर की आशीष याचना स्वीकारना !

❑ **दीवाली व नूतन वर्षः–**हर साल की तरह दीवाली व नूतन वर्ष आ रहा है....वच.अंत्य.प्र.2 में भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि प्रत्यक्ष भगवान की प्राप्ति–वही परमपद और वही मोक्ष....ये भगवान, ये साधु, यह जोग, यह मानवदेह एक साथ.....ओह ! कैसी भव्य प्राप्ति....?

वास्तव में दीवाली के जलते दीप हमें मार्गदर्शन देते हैं कि बाहर दीप जलाने से बाहरी अंधकार दूर होता है वैसे ही इंद्रियों–अंतःकरण के गहरे अंधकार को दूर करने गुरुरूपी ज्योति–ज्ञानरूपी ज्योति की आवश्यकता है ही.....सच्चा गुरु ही हमारी सूक्ष्म-सूक्ष्म त्रुटियों का दर्शन कराएगा और सच्ची राह दिखायेगा। हम सभी को भगवान रखे–गुणातीत भाव को पाए सच्चे गुरु मिले तो हैं ही....उन्होंने हमारे बिना कहे हमारी बाहरी व आंतरिक जिम्मेवारी ली ही है। परन्तु हम सभी यदि उनके सिद्धान्तों को लेकर जीवन जीने की सुरुचिमात्र रखेंगे, महिमासभर रहेंगे तो प.पू. काकाजी के ही शब्दों में **'हमें तो हर रोज दिवाली !'** हमारे जीवन में हमेशा उमंग, उत्साह, खुशियाँ रहेंगी...और सच ! प.पू. काकाजी का हम सब से यही आग्रह था कि प्रभुस्वरूप संत के

प्रति हमेशा हमारी महिमा से भरी दृष्टि रहे... क्योंकि गुणातीत साधु जब हमारे मन, इन्द्रियों – अंतःकरण, बुद्धि का रूपांतर करने, हमारी वृत्तियों पर प्रहार करते हैं–हमारे भीतर की सफाई करने आते हैं तब हम उन्हें हितकारी स्वरूप न समझ कर उन्हें बुद्धि से नापते-तोलते रहते हैं और...अपने मन में उनके प्रति गलतफहमियाँ पालकर स्वयं तो दुःखी रहते ही हैं, साथ ही–प्राप्ति का जो सुख भोगना है वह नहीं भोग पाते। परन्तु यदि ऐसे समय हमने दिल की सच्चाई से यह समझ रखा होगा कि भगवान रखे साधु और हम में इतना फर्क है जितना इन्सान व जानवर में.....तो हमारा मन, हमारे स्वभाव, हमारी वृत्तियाँ ऐसे साधु के प्रति अमहिमा में फंसाकर हमारा संबंध तुड़वा नहीं सकेंगी। इसी बात का महाराज ने वच. लोया 17 में स्पष्ट निर्देश करा है जिसे मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने छः महीने तक जूनागढ़ मंदिर में लगातार पढ़वाया और गुरुहरि योगीजी महाराज ने संतों को यह वचनामृत कंठस्थ करवाया था...तो आइए दीवाली के इस अंक से उसी वचनामृत को पढ़कर, उस पर मनन-चिंतन करके उसे जीवन में उतारने का प्रयास करें जिससे कि हमारे जीवन का हर दिन दीवाली ही बना रहे.....

वचनामृत—लोया 17

स्तुति—निन्दा का

सम्वत् 1877 में मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या के दिन श्रीजी महाराज लोया गांव में भक्तराज सुराखाचर के राजभवन में पलंग पर विराजमान थे। उन्होंने माथे पर सफेद फेंटा बांधा था और दूसरे फेंटे को गले के आसपास लपेट रखा था। गरम पोस की लाल बगलबंडी अंदर सफेद अंगरखे के साथ पहन रखी थी। सफेद दुपट्टा ओढ़ा था और शाल लपेट कर ऊपर पीली रजाई ओढ़ रखी थी। महाराज के मुखारविंद के सम्मुख मुनियों तथा देश-देशों के हरिभक्तों की सभा लगी हुई थी। इस प्रकार रात्रि के समय श्रीजी महाराज प्रसन्नचित्त से विराजमान थे।

श्रीजी महाराज ने स्वयं ही बात शुरु करी– 'देखो ना भगवान की माया का बल कैसा है जिससे कि विपरीतभाव अधिक प्रबल हो जाता है; क्योंकि –कोई पहले कितना अच्छा दिखाई पड़ता हो वही बाद में अत्यधिक बुरा हो जाता है।' यूँ कहकर फिर परमहंसों के प्रति बोले–'आज तो प्रश्न पूछो तो बातें करें।'

तब नित्यानंदस्वामी ने पूछा–'हे महाराज ! पहले अच्छा दिखाई पड़ता हो और महिमा गाता हो, वही निन्दा करने लग पड़ता है; परन्तु देश, काल, क्रिया, संग चाहे कैसा ही विपरीत हो जाये तब भी वह अच्छा ही रहे, लेकिन किसी भी प्रकार उसकी मति विपरीत न हो उसका क्या उपाय है?

तब श्रीजी महाराज बोले–'जिसे देह का अनादर हो व दृढ़ आत्मनिष्ठा हो और पंचविषय में वैराग्य हो तथा भगवान का माहात्म्यसहित यथार्थ निश्चय हो, उसे चाहे कैसे ही देशकालादि की कठिनाई आए तो भी उसकी मति विपरीत नहीं होती। और जो देहाभिमानी हो व जिसे पंचविषय से अत्यधिक अरुचि न हुई हो और संत यदि उस विषय का खंडन करे तो–वह संत खूब बड़े भी हों, उसका भी अभाव आए और भगवान का भी अभाव आए।

भगवान का भले ही यथार्थ निश्चय हो, परन्तु पंचविषय के प्रति यदि अत्यन्त अभाव न हुआ हो और उसकी आसक्ति हो व उस विषय का मुक्तानंदस्वामी जैसे खंडन करें तो शस्त्र द्वारा वार करके उसका सिर उड़ा देने तक का वह द्रोह करे।

फिर नित्यानंदस्वामी ने पूछा–'किसी को देहाभिमान तथा पंचविषय में आसक्ति हो, फिर भी वह सत्संग में निभ जाता है, उसका क्या समझना?

तब श्रीजी महाराज बोले कि–जब तक उसे कोई धक्का नहीं लगा तब तक निभ जाता है, लेकिन जब कोई बड़ा संत या भगवान उसके मान को खोदेंगे व उसके स्वाद, देहाभिमान, लोभ, काम, क्रोध का खंडन करेंगे तब उसे जरूर उस संत का अभाव आएगा व वह जरूर उस संत का द्रोह करेगा व सत्संग से विमुख हो जाएगा। जैसे सांप ने लार डाली हो ऐसे शक्कर मिले दूध को जिसने पीया हो वह भले ही सांस ले रहा हो परन्तु पल-दो पल में, शाम-सबेरे या आज-कल में जरूर मरने वाला ही है। ठीक उसी प्रकार जो देहाभिमानी है वह महीने, दो महीने, वर्ष, दो वर्ष, दस वर्ष या अंत समय–देह छोड़कर भी कभी ना कभी वह जरूर संत का अभाव लेकर गिर जाएगा। और जिसे देहाभिमान न हो व यूँ समझता हो कि 'अन्तःकरण इन्द्रियों का प्रकाशक व जिसके कारण देह चलती-फिरती है ऐसी सत्तारूप जो आत्मा वह मैं हूँ और ऐसा मैं धन-स्त्री इत्यादि कोई पदार्थ मिलने से सुखी होऊँ ऐसा नहीं और वह पदार्थ न मिलने पर दुःखी होऊँ ऐसा नहीं।' ऐसी दृढ़ समझदारी जिसे हो उसे संत चाहे किसी भी प्रकार पंचविषय का खंडन करें तथा देहाभिमान का खंडन करें तब भी उस संत का अभाव किसी भी तरह नहीं आए और तुच्छ पदार्थ के लिए संत के साथ झंझट न हो–न ही ऐसी बल पड़ जाए जो कभी छूटे ही नहीं।'

फिर नित्यानंदस्वामी ने पूछा–'जो पंचविषय के प्रति उदासीन हो उसे कैसे जानना?

तब श्रीजी महाराज बोले–'जिसे विषय का अभाव हुआ हो वह बढ़िया खानपान आये तो खाए तो सही, लेकिन साधारण खानपान में जैसी खुशी रहती हो वैसी उसे खुशी रहे नहीं बल्कि परेशानी लगे और सादे से व मोटे कपड़े पहनने में उसे जो खुशी रहती हो, वैसी खुशी उसे पतले–बढ़िया कपड़े पहनने पड़े उसमें न रहे बल्कि मन मुरझा जाए। उसी तरह अच्छा बिछौना मिले या कोई मान दे इत्यादि अच्छे-अच्छे पदार्थों में उसका मन परेशान रहे, पर उसमें किसी तरह आनन्द पाए ही नहीं, तब जानना कि उसे विषय के प्रति अभाव है।

फिर मुक्तानंदस्वामी ने प्रश्न पूछा–'हे महाराज ! इन पंचविषय के प्रति अभाव कैसे होता है?'

तब श्रीजी महाराज बोले–'विषय के प्रति अभाव होने का मुख्य साधन तो परमेश्वर का माहात्म्य है और उसके बाद आत्मनिष्ठा व वैराग्य है। वह माहात्म्य क्या? तो–'भगवान के डर से इन्द्र वर्षा करते हैं, सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा प्रकाश देते हैं, पृथ्वी ने सभी को धार रखा है, समुद्र अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता, औषधियाँ ऋतु को पाकर फलती हैं और भगवान जगत की उत्पत्ति–स्थिति–प्रलय करते हैं और उनकी शक्ति काल है, माया है, पुरुष है, अक्षर है'–यूं जो भगवान की महिमा समझता हो उसे जगत में ऐसा कौन सा पदार्थ है जो बंधनरूप हो? काम, क्रोध, लोभ, मान, ईर्ष्या, स्वाद, बढ़िया–पतले वस्त्र, धन, स्त्री तथा जो-जो भी पंचविषय से संबंधित अन्य पदार्थ हैं वे बंधनरूप हो ही नहीं सकते। क्योंकि उसने तो पहले से ही सभी चीज की नापातौली कर रखी है कि 'वे भगवान

ऐसे हैं और ऐसा इन भगवान के भजन-स्मरण, कथावार्ता में सुख है तथा अक्षर तो ऐसा है व उस अक्षर का सुख ऐसा है व गोलोक, बैकुंठ, श्वेतद्वीप का सुख ऐसा है व प्रकृति पुरुष का सुख ऐसा है, ब्रह्मलोक का सुख ऐसा है, स्वर्ग का सुख ऐसा है व राज्य आदि का सुख ऐसा है। यूं उन सभी सुखों की तुलना में भगवान के सुख को ही सबसे अधिक जानकर जो भगवान में जुड़ा हो उसे ऐसा कौन-सा पदार्थ है जो भगवान के चरणों से अलग कर सके? कोई नहीं कर सकता। जैसे पारसमणि हो, उसके स्पर्श से लोहा जो सोना बन जाता है फिर पारसमणि भी उसे दोबारा लोहा नहीं बना सकती। उसी प्रकार जिसने भगवान का ऐसा माहात्म्य जान लिया हो, उसे तो यदि भगवान गिराना चाहें तो भी भगवान के चरणार्विंद से वह नहीं हटता ! तो क्या अन्य पदार्थों के कारण वह गिरेगा? नहीं ही गिरेगा।

और उन भगवान का भजन करने वाले संत का भी वह बहुत माहात्म्य यूं समझता है कि 'ऐसे अतिशय बड़े भगवान और उन भगवान के साक्षात् उपासक ये संत हैं, सो ये बहुत महान हैं।' जैसे उद्धवजी स्वयं कितने बड़े थे, परन्तु वे भगवान का यूं माहात्म्य समझते थे तो, स्वयं के सयानेपन का उन्हें कोई मान नहीं रहा और गोपियों के पाँव को धूल पाने की इच्छा रखी और अगले जन्म में वृन्दावन के वृक्ष-बेल का अवतार पाने की याचना की। क्योंकि—ऐसे बड़े भगवान जिनके मार्ग को वेद की श्रुतियाँ ढूँढ़ती हैं, उन भगवान के प्रति उन्होंने इन गोपियों की प्रीति अत्यधिक देखी। ऐसे भगवान के संत के सम्मुख मान कैसे रह सकता है? और उनके पास झुककर कैसे नहीं रह सकते? उनके पास तो दास के दास बनकर रहना चाहिए तथा वे पांच-पांच जूते मारे तब भी सहन कर लें और समझे कि 'यह मेरा सौभाग्य है जो मैं ऐसे संत का तिरस्कार सहता हूँ वर्ना प्रारब्धवश होकर अपनी घरवाली, बच्चों से तिरस्कार सहन करना पड़ता व प्रारब्धवश होकर भाजी तथा काई खोदकर खानी पड़ती। इससे अच्छा तो संत के संग मैं निःस्वादी प्रण का नियम पालता हूँ वह मेरा बड़ा सौभाग्य है और प्रारब्धवश जैसे-तैसे चीथड़े पहनने पड़ते जबकि इस संत के संग मैं रजाई ओढ़ता हूँ, यह मेरा खूब सौभाग्य है। पर, यदि संत की सभा में जाने पर वहां यदि आदर नहीं मिलता और वह संत का अवगुण लेता है तो उसे संत की महिमा समझ आई ही नहीं है वर्ना अवगुण लेता ही नहीं। जैसे बम्बई के गवर्नर साहब कुर्सी डालकर बैठे हों और उनकी सभा में कोई गरीब जाए और उसे कोई कुर्सी न दे व पूछे करे नहीं तो क्या उस अंग्रेज पर वह गुस्सा करेगा? क्या उसे गाली देने का मन करेगा? तनिक भी ऐसा कुछ नहीं होता; क्योंकि उस अंग्रेज की महिमा को वह समझता है कि 'यह तो मुल्क का बादशाह है और मैं तो कंगाल हूँ'। यूँ समझकर वह गुस्सा नहीं करता। इस तरह यदि संत की महिमा समझी हो, तो वे संत चाहे कैसा भी तिरस्कार करे, तब भी उसे गुस्सा नहीं आता बल्कि स्वयं का ही दोष देखता है और संत का अवगुण तो किसी कारण लेता ही नहीं। सो, जिसने भगवान और संत का माहात्म्य ठीक से समझ लिया है उसी का पांव सत्संग में अडिग है। जिसे महिमा समझ नहीं आई है उसका भरोसा नहीं।

❋❋❋❋

ब्रह्मप्रवाह

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और संतवर्य योगीजी महाराज ने
अनहद् परिश्रम और अनेक अपमान सह कर
अक्षरधाम का सुख इस देह के रहते हुए ही प्राप्त हो
और
दुर्लभ से दुर्लभ ऐसा जो एकांतिकभाव–वह सिद्ध करना
हमारे लिए एकदम आसान करके
दिव्य जीवन की अनोखी मौज दी है।
तो, निर्दोषबुद्धि के ही कायदे से
समग्र गुणातीत समाज देश-परदेश में तीव्र गति से बढ़ता ही
जाता है
और
अब 1985 में तो अक्षरपुरुषोत्तम तत्त्वज्ञान का 'सुवर्ण कलश'
चढ़ जाएगा
व
संतों, मुक्तों, युवकों, बहनों और गृहस्थों सभी हिलमिलकर,
एकजुट होकर
अल्प संबंध वाले मुक्तों की भी महिमा समझकर
देश-परदेश में गुणातीत द्विशताब्दी मनाते रहेंगे।
तो, आओ–आओ–सभी आओ–
जरा भी अंतराय रखे बिना हम प्रेम से मिलें
और
भीतर की गहराई में दस-बीस पच्चीस वर्ष के बाद भी
कहीं जात का अभिमान
या मयाराम के पंडितत्व का सूक्ष्मभाव
या तो तप से ढेर में दबे ऋषि के भाव का और वासना की लौ गई न हो–
स्वभाव टले न हों–
हठ, मान, ईर्ष्या–भेदभाव रह जाता हो,
मनुष्यभाव आ जाता हो
और
सच्ची साधुता न प्रगटी हो

तो,
गुण से पर हो ही नहीं सकते
और
प्रभु एवं अति बड़े सत्पुरुष को प्रार्थना भी नहीं पहुँचती
व
जीव कभी ब्रह्मरूप भी होता नहीं।
और तब तक
प्रभु सेवा भी अंगीकार नहीं करते।
सो अति बड़े पुरुष का अब केवल अनुग्रह है–
प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी और प.पू. काकाजी के अंतर
के शुभाशीष हैं ही
कि–
दो समकक्षा के भिन्न प्रकृति वाले
मुक्तों में सद्भावना से
मैत्रीभाव दृढ करोगे तो साधना की संपूर्ण पूर्णाहुति होगी ही
और
ब्राह्मीस्थिति प्राप्त होकर
सर्व प्रकार से भगवान के ही दिव्यसुख का अनुभव होगा,
भोगोगे, प्राप्त होगा
और
संबंध में आये सभी को खुले दिल से दे भी पाओगे

यूं इस साल सभी ऐसा सत्य संकल्प करके ही प्रार्थना करें
जिससे कि
ऐसी सुरुचि प्रगटे व सत्पुरुष के उत्तम प्रकार के इस अनुग्रह
के पात्र बने !

इसी अभिप्सा सह
आपके ही दादुकाका के हेतपूर्वक
नए वर्ष के जय स्वामिनारायण !
27-8-84, शिकागो

❑❑❑

स्वामी की बातें

317. देह, इन्द्रियाँ मायिक है और पदार्थ भी मायिक हैं सो सजातीय हुए, अतः देह उसमें चिपकेगा। पूर्व का संस्कार हो—तो नहीं चिपकेगा।

प्र—5,52

318. ....कलियुग में तमोगुण, रजोगुण का प्रभाव अधिक है इसलिए कीर्तन गाना व भजन करना ताकि तमोगुण हावी ना हो सके। भजन यूँ करना कि जैसे दो हजार घोड़ों की टापों की आवाज होती हो तो उसमें से कोई सीधे निकल न सकें, वैसे खूब तेजी से भजन करना जिससे संकल्प भीतर में जा ही नहीं पाये।

प्र—5,53

319. स्पर्श-स्वाद में तो जीव चिपके ही हैं। यह जान लेना और यदि कोई चिपकता नहीं दिखाई पड़ता, तो उसका पूर्व का संस्कार है और यह मार्ग तो नीचे की ओर जाती पानी की धारा के प्रवाह को ऊपर चढ़ाने जैसा है।

प्र—5,55

320. राजा की शरण में जो चला जाए उसके गुनाह राजा माफ कर देता है, यूं भगवान जीव के गुनाह माफ करते हैं। लेकिन जीव ऐसा टेढ़ा है कि स्वयं को खूब मानकर भगवान की शरण में नहीं जाता और भगवान तो दिन के दूसरे पहर चढ़ने तक जीव के गुनाह माफ करते रहते हैं। *प्र—5,56*

321. कई लोग कहते हैं कि वह कुछ जानते नहीं व इन्हें कुछ आता नहीं। परन्तु गद्दी पर किसने बिठाया है? इस बात का उन्हें कुछ पता भी है क्या? सब कुछ जानता है तब ही गद्दी पर बिठाया है। यह तो सत्संग में कुसंग की बात करी। अब मोक्ष की बात करते हैं कि.....प्रगट स्वरूप को एक प्रणाम करने से मोक्ष होता है। यह तो करोड़ों प्रणाम किये होंगे, पर मोक्ष होने की प्रतीति नहीं आती और शांति भी नहीं होती। पर, यदि प्रगट भगवान को **जानकर व पहचान कर एक प्रणाम करें**, तो भगवान के धाम में जाये और मोक्ष होने की प्रतीति होवे व शांति भी होवे। *प्र—5.311*

❑ ❑ ❑

सूचना : दिल्ली अशोकविहार स्थित हमारे केन्द्र के Telephone Nos. (दूरभाष) इस प्रकार हैं—

दूरभाष : 7229327
7249327
7131199 —अक्षरज्योति (बहनों का केन्द्र)

परमानंद.....

हमारा परम सौभाग्य है कि प.पू. काकाजी महाराज के 'अमृतपर्व' का परम पवित्र महोत्सव साक्षात् गुणातीत स्वरूपों प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. हरिभाई साहेब की निश्रा में 'अक्षरधाम' पवई–बम्बई में दि. 31 दिसम्बर '93 1, 2 जनवरी '94 को भव्यता से मनाएंगे....आईये, आईये, आप सभी को इस महामंगलकारी अवसर पर 'अक्षरधाम' आकर, दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ लेकर आशीर्वाद प्राप्त करने का हार्दिक निमन्त्रण है.....

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	26.10.93	मंगलवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	30.10.93	शनिवार	शरद्पूर्णिमा मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
3.	दि.	10.11.93	बुधवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	11.11.93	गुरुवार	धनतेरस
5.	दि.	13.11.93	शनिवार	दीवाली, लक्ष्मी–शारदा पूजन
6.	दि.	14.11.93	रविवार	अन्नकूटोत्सव, नूतनवर्ष प्रारम्भ
7.	दि.	15.11.93	सोमवार	भैयादूज
8.	दि.	18.11.93	गुरुवार	लाभपंचमी
9.	दि.	24.11.93	बुधवार	प्रबोधिनी एकादशी, व्रत
10.	दि.	29.11.93	सोमवार	कार्तिकी पूर्णिमा

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at R.P. Printers, Shahdara, Delhi-110 032